राष्ट्रीय प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय अंतर्गत मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर में एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम बायोफ्लॉक कल्चर पर आयोजित किया गया, जो कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड द्वारा पोषित किया गया है। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) सीता प्रसाद तिवारी जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन में सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता संकाय एवं मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आर.पी.एस. बघेल द्वारा स्वागत उद्बोधन में कहा गया कि इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम होने से मत्स्य पालन को काफी बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम में डॉ. बी.पी. मोहन्ती, ए.डी.जी., आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली द्वारा विशिष्ट उद्बोधन दिया गया जिसमें उनके द्वारा बताया गया कि इंटेन्सिव क्लचर मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय एवं फिशरीज़ विभाग, मध्यप्रदेश मिलकर करें तो निष्चित ही इसमें बहुत फायदा होगा। भारत सरकार की प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत मत्स्य पालन गतिविधियों एवं मत्स्य उत्पादन को बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में आगे बढने के लिए राशि प्रदान की जा रही है।

मध्यप्रदेश के फिशरीज विभाग के प्रभारी डायरेक्टर श्री भरत सिंह जी सम्माननीय अतिथि द्वारा विशिष्ट संदेश दिया गया जिसमें उन्होनें बताया कि मत्स्य उत्पादन को 2 लाख से तीन लाख मीट्रिक टन तक ले जाना है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत सब्सिडी प्रदान की जा रही है। भारत सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं से प्रदेश में मत्स्य पालन के कार्यों को सहायता प्रदान की जा रही है। बेस्ट इंटरप्रिन्यूर्स का अवार्ड देवास जिले में मिला जिन्होंने 111 टन पंगेशियस मछली का उत्पादन किया गया। डॉ. माधुरी शर्मा द्वारा कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया। इस कार्यक्रम में देश भर के तकरीबन 571 प्रतिभागियों द्वारा कार्यक्रम में पंजीकरण करवाया गया। तथा कार्यक्रम में लगभग 220 प्रतिभागियों द्वारा सहभागिता की गई। कार्यक्रम में कृशक, वैज्ञानिक एवं छात्र रहे। इस कार्यक्रम में देश के तीन वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिया गया जिसमें डॉ. एम.डी. अक्लाकुर, वैज्ञानिक आई.सी.ए.आर., सीफी रीजनल सेन्टर मोतीपुर, बिहार द्वारा बॉयोफ्लाक टेक्नालॉजी की भूमिका एवं उसके महत्व विषय पर व्याख्यान दिया गया। इसके पश्चात् डॉ. अक्षय पानीग्राही प्रधान वैज्ञानिक फिश एवं फिशरी साइंस, आई.सी.ए.आर., सीफा, चेन्नई द्वारा बॉयोफ्लाक के विभिन्न कम्पोनेन्टस के विशय पर विस्तार से बताया तथा डॉ. अंबिका प्रसाद नायक, वैज्ञानिक (फिशरी साइंस) के.वी. के., पुरी, साक्षी गोपाल, ओडिशा द्वारा एप्लीकेशन ऑफ बायोफ्लॉक टेक्नोलॉजी फॉर डेवेलपमेंट ऑफ सस्टेनेबल एक्वाकल्चर विशय पर पर चर्चा की गई। कार्यक्रम के अंत में डॉ. के.के. जैन, सेवानिवृत्त प्रख्यात प्रोफसर एवं प्रधान वैज्ञानिक, फिश एवं फिशरी साइंस आई.सी.ए.आर., सी.आई.एफ.टी., मुम्बई ने कहा कि बायोफ्लॉक कल्चर बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। इसमें छात्रों को विशेष प्रशिक्षण देने की आवष्यकता है। यह ऑनलाइन कार्यक्रम बहुत ही प्रभावी एवं सारगर्भित रहा एवं श्री के. एल. मरावी जी इंचार्ज, ज्वाइंट डायरेक्टर फिशरीज, जबलपुर डिवीजन, जबलपुर द्वारा विशिष्ट उद्बोधन दिया गया। कार्यक्रम में डॉ. ए.पी. सिंह, डायरेक्टर बायोटेक्नालाजी का विशेष सहयोग रहा। डॉ. माधुरी शर्मा द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. सोना दुबे द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. माधुरी शर्मा एवं सह–समन्वयक डॉ. प्रीति मिश्रा रहीं। कार्यक्रम में विशेष सहयोग श्री मुकेश कुमार, शिवानी पाठक, शुभेन्दु द्विवेदी एवं शिवम पांडे का रहा।

सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी
ना.दे.प.चि.वि.वि., जबलपुर